



भारत में थारू जनजाति की समकालीन स्थिति: सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं विकासात्मक परिप्रेक्ष्य

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23163171>

Santosh kumar¹, Dr. Mamta kumari²

***Corresponding Author:** ¹Research scholar in Sociology Sanskrit University
Asst. Professor in Sociology V.B.S. Govt. Degree College Caimpianganj Gorakhpur,
Uttar Pradesh – 273158, India

²Asst. Professor in Sociology Sanskriti University Mathura, Uttar Pradesh, India

सारांश

थारू जनजाति भारत के तराई क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण अनुसूचित जनजातीय समुदाय है, जिसकी प्रमुख आबादी उत्तर प्रदेश के भारत-नेपाल सीमा से लगे क्षेत्रों में निवास करती है। ऐतिहासिक रूप से थारू समुदाय का सामाजिक-आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वन-संसाधनों, स्थानीय पारिस्थितिकी, पारंपरिक ज्ञान तथा सामुदायिक संस्थाओं पर आधारित रहा है। समकालीन दौर में शिक्षा, सड़क एवं संचार सुविधाओं के विस्तार, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, बाजार-व्यवस्था, प्रवासन, प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से थारू समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है। इसके बावजूद आजीविका की असुरक्षा, भूमि एवं वन-संसाधनों तक पहुँच, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, डिजिटल असमानता, भाषा-परिवर्तन तथा सांस्कृतिक पहचान जैसी समस्याएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं।

यह शोध-पत्र वर्णनात्मक दृष्टिकोण से भारत में थारू जनजाति की समकालीन स्थिति का विश्लेषण करता है, जिसमें विशेष ध्यान उत्तर प्रदेश पर केंद्रित है। अध्ययन में जनगणना-2011, प्रकाशित शोध-अध्ययनों तथा उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। जनगणना-2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में थारू जनसंख्या 1,05,291 थी, जिसमें 53,687 पुरुष तथा 51,604 महिलाएँ थीं। समकालीन थारू समाज को केवल परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह एक ऐसी सामाजिक परिवर्तनशील स्थिति को दर्शाता है जिसमें आधुनिक संस्थाओं में बढ़ती सहभागिता के साथ सांस्कृतिक निरंतरता भी विद्यमान है।

प्रमुख शब्द: थारू जनजाति, अनुसूचित जनजाति, जनजातीय समाज, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक पहचान

प्रस्तावना

भारत सामाजिक, सांस्कृतिक और जातीय विविधता वाला देश है। इस विविधता में जनजातीय समुदायों का विशिष्ट स्थान है। इन समुदायों का सामाजिक जीवन ऐतिहासिक रूप से भूमि, वन, प्राकृतिक संसाधनों, सामुदायिक संस्थाओं तथा विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा रहा है। इसलिए किसी जनजातीय समुदाय की समकालीन स्थिति का मूल्यांकन केवल गरीबी, आय या आर्थिक विकास के पारंपरिक संकेतकों के आधार पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए सामाजिक संरचना, आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीतिक भागीदारी तथा सांस्कृतिक पहचान तथा आधुनिक संस्थाओं के साथ संबंधों का समग्र समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।

थारू जनजाति तराई क्षेत्र की ऐतिहासिक रूप से प्रमुख जनजातीय समुदायों में से एक है। भारत में इसका मुख्य संकेंद्रण उत्तर प्रदेश के उत्तरी तराई क्षेत्र में पाया जाता है। विशिष्ट भौगोलिक एवं पारिस्थितिक परिस्थितियों के बीच थारू समुदाय ने अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था विकसित की। कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वन-संसाधनों का उपयोग, पारंपरिक ज्ञान तथा सामुदायिक संबंध इसके जीवन के मुख्य आधार रहे हैं। समकालीन समय में थारू समाज पारंपरिक जीवन-व्यवस्था से आगे बढ़ते हुए आधुनिक संस्थाओं के साथ निरंतर संपर्क स्थापित कर रहा है। सड़क, विद्यालय, संचार माध्यम, सरकारी संस्थाएँ, बाजार तथा कल्याणकारी योजनाएँ थारू बस्तियों को व्यापक सामाजिक व्यवस्था से जोड़ रही हैं। इसके साथ ही रोजगार, भूमि, स्वास्थ्य, भाषा, सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक असमानता से संबंधित नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. भारत में थारू जनजाति की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन करना।
2. थारू समुदाय की आजीविका, भूमि एवं प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित स्थिति का विश्लेषण करना।
3. शिक्षा एवं स्वास्थ्य की समकालीन स्थिति का अध्ययन करना।
4. थारू महिलाओं तथा युवाओं की बदलती सामाजिक स्थिति और आकांक्षाओं को समझना।
5. भाषा, सांस्कृतिक पहचान एवं पारंपरिक ज्ञान पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. डिजिटल परिवर्तन एवं राजनीतिक सहभागिता की उभरती भूमिका को समझना।
7. सरकारी विकास एवं कल्याणकारी कार्यक्रमों के संदर्भ में थारू समुदाय के सामाजिक समावेशन का विश्लेषण करना।
8. समकालीन चुनौतियों तथा संभावित विकासात्मक अवसरों को समाजशास्त्रीय दृष्टि से प्रस्तुत करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए भारत की जनगणना-2011, प्रकाशित शोध-पत्र, पुस्तकों तथा थारू समुदाय से संबंधित उपलब्ध अकादमिक साहित्य को आधार बनाया गया है। जनगणना-2011 थारू जनसंख्या से संबंधित विस्तृत जनसांख्यिकीय जानकारी उपलब्ध कराने वाला नवीनतम पूर्ण भारतीय जनगणना स्रोत है; इसलिए वर्तमान जनसंख्या के लिए 2026 के आधिकारिक आँकड़े उपलब्ध न होने की स्थिति में 2011 के आँकड़ों को ही आधारभूत संदर्भ के रूप में प्रस्तुत करना अधिक उपयुक्त है।

अध्ययन में सामाजिक समावेशन, सामाजिक बहिष्करण, सामाजिक परिवर्तन, आजीविका सुरक्षा, सांस्कृतिक निरंतरता तथा क्षमता-विकास जैसे समाजशास्त्रीय अवधारणात्मक उपकरणों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का यह दृष्टिकोण का उद्देश्य सांख्यिकीय विवरण प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि थारू समाज की समकालीन सामाजिक दशा को उसके ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा संस्थागत संदर्भ में समझना है।

ऐतिहासिक एवं पारिस्थितिक पृष्ठभूमि

थारू समुदाय का ऐतिहासिक विकास तराई के पारिस्थितिक क्षेत्र से गहराई से जुड़ा रहा है। तराई क्षेत्र की उपजाऊ भूमि, वन-संपदा तथा प्राकृतिक संसाधनों ने थारू जीवन-शैली को प्रभावित किया। आवास की संरचना, भोजन की आदतें, कृषि-पद्धतियाँ, व्यवसाय, सामाजिक संगठन तथा पारंपरिक ज्ञान का विकास स्थानीय पर्यावरण के साथ लंबे समय तक बने संबंधों के परिणामस्वरूप हुआ।

थारू समुदाय और प्राकृतिक पर्यावरण का संबंध केवल आर्थिक नहीं था। वन एवं कृषि भूमि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के भी महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। औषधीय पौधों, कृषि-पद्धतियों, स्थानीय वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं से संबंधित ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होता रहा। आधुनिक प्रशासनिक संस्थाओं, संरक्षण-व्यवस्थाओं, बाजार संबंधों तथा आधारभूत संरचना के विस्तार ने इस पारंपरिक संबंध को परिवर्तित किया है।

जनसांख्यिकीय स्थिति

जनगणना-2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में थारू जनजाति की कुल जनसंख्या 1,05,291 थी। इसमें 53,687 पुरुष और 51,604 महिलाएँ थीं। छह वर्ष से कम आयु के बच्चों का अनुपात लगभग 17 प्रतिशत था। जनगणना में थारू समुदाय को उत्तर प्रदेश की अनुसूचित जनजातियों के अंतर्गत पृथक् रूप से दर्ज किया गया है तथा निवास, लिंग, धार्मिक समुदाय, कार्यशीलता और शैक्षणिक सहभागिता से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध है।

थारू जनसंख्या मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। तराई क्षेत्र में भौगोलिक संकेंद्रण के कारण कृषि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता लंबे समय तक बनी रही। साथ ही, भौगोलिक दूरी और ग्रामीण अवसंरचना की असमान उपलब्धता ने शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों तक पहुँच को प्रभावित किया है।

सामाजिक संगठन एवं सामुदायिक संरचना

परंपरागत थारू समाज परिवार, नातेदारी, विवाह, सामुदायिक संबंधों और प्रथागत संस्थाओं पर आधारित रहा है। परिवार आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की प्रमुख इकाई रहा है। कृषि कार्य, सामाजिक समारोह, त्योहार तथा सामुदायिक समस्याओं के समाधान में सहयोग की परंपरा का विशेष महत्व रहा है। समकालीन दौर में पारंपरिक संस्थाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं, बल्कि उनका संबंध औपचारिक संस्थाओं के साथ बढ़ा है। ग्राम पंचायत, विद्यालय, बैंक, सरकारी विभाग, बाजार और कल्याणकारी संस्थाएँ अब थारू सामाजिक जीवन का हिस्सा बन रहे हैं। इस परिवर्तन को संस्थागत बहुलवाद के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें पारंपरिक और आधुनिक संस्थाएँ एक साथ कार्य करती हैं।

आर्थिक स्थिति एवं आजीविका

कृषि परंपरागत रूप से थारू समुदाय की मुख्य आर्थिक गतिविधि रही है। निर्वाह कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वन-आधारित गतिविधियाँ तथा स्थानीय संसाधनों का संग्रह परिवार की आजीविका के मुख्य साधन रहे हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ कृषि मजदूरी, वेतन रोजगार, लघु व्यवसाय, सरकारी सेवा, स्वरोजगार, प्रवासन तथा सेवा क्षेत्र भी आय के स्रोत बन रहे हैं।

हालाँकि आर्थिक विविधीकरण का लाभ समुदाय के सभी परिवारों को समान रूप से नहीं मिला है। कुछ परिवार शिक्षा, रोजगार, बाजार और आधुनिक आर्थिक अवसरों से बेहतर रूप से जुड़ पाए हैं, जबकि अन्य परिवार अभी भी आर्थिक असुरक्षा का सामना कर रहे हैं। इसलिए थारू समुदाय की आर्थिक स्थिति को सिर्फ आय के आधार पर नहीं, बल्कि आजीविका सुरक्षा के व्यापक दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है। भूमि, ऋण तक पहुँच, कृषि उत्पादकता, रोजगार की स्थिरता, शिक्षा तथा बाजार से जुड़ाव सामूहिक रूप से आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं।

भूमि, वन एवं प्राकृतिक संसाधन

भूमि और वन थारू आजीविका के पारंपरिक आधार रहे हैं। कृषि भूमि भोजन तथा आय का स्रोत रही है, जबकि वन ईंधन, भोजन, औषधीय पौधों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की पूर्ति करते रहे हैं। आधुनिक संरक्षण नीतियों तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं ने प्राकृतिक संसाधनों तक समुदाय की पहुँच को प्रभावित किया है।

समकालीन विकास-नीति की प्रमुख चुनौती पर्यावरण संरक्षण तथा सामुदायिक आजीविका के बीच संतुलन स्थापित करना है। स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान की उपेक्षा करने वाली विकास-व्यवस्था सामाजिक बहिष्करण को बढ़ा सकती है, जबकि सहभागी संरक्षण-व्यवस्था पर्यावरणीय सुरक्षा और समुदाय के हितों के बीच संतुलन स्थापित कर सकती है।

शैक्षणिक स्थिति

शिक्षा थारू युवाओं के लिए सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है। विद्यालयों के विस्तार और सरकारी शैक्षणिक कार्यक्रमों के कारण औपचारिक शिक्षा में सहभागिता के अवसर बढ़े हैं। जनगणना में अनुसूचित जनजातियों, जिनमें थारू भी शामिल हैं, के लिए विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर की शैक्षणिक सहभागिता संबंधी जानकारी उपलब्ध है।

फिर भी माध्यमिक, उच्च तथा व्यावसायिक शिक्षा तक पहुँच में असमानता बनी हुई है। शैक्षणिक संस्थानों से दूरी, आर्थिक सीमाएँ, अपर्याप्त आधारभूत सुविधाएँ, परिवार की शैक्षणिक पृष्ठभूमि तथा प्राथमिक से उच्च शिक्षा की ओर संक्रमण जैसी समस्याएँ शैक्षणिक निरंतरता को प्रभावित कर सकती हैं।

शिक्षा सांस्कृतिक परिवर्तन का भी माध्यम बन रही है। हिंदी तथा अंग्रेजी का बढ़ता महत्व व्यापक सामाजिक और व्यावसायिक अवसर प्रदान करता है, किंतु इसके साथ थारू भाषा और पारंपरिक सांस्कृतिक ज्ञान के पीढ़ीगत हस्तांतरण पर प्रभाव पड़ने की संभावना भी रहती है।

भाषा एवं सांस्कृतिक पहचान

भाषा सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। थारू समुदाय की अपनी भाषायी परंपराएँ, लोककथाएँ, गीत, अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक व्यवहार हैं। जनगणना-2011 में अनुसूचित जनजातियों की मातृभाषा से संबंधित पृथक जानकारी उपलब्ध होना भाषायी संरक्षण एवं दस्तावेजीकरण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

हिंदी का शिक्षा, प्रशासन और रोजगार में बढ़ता प्रयोग थारू समुदाय के व्यापक सामाजिक सहभागिता के अवसरों को बढ़ाता है। दूसरी ओर, दैनिक जीवन में प्रभुत्वशाली भाषाओं के बढ़ते प्रयोग से थारू भाषा के पीढ़ीगत हस्तांतरण में कमी आ सकती है। इसलिए सामाजिक गतिशीलता और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। द्विभाषी अथवा बहुभाषी शिक्षा इस दिशा में प्रभावी माध्यम हो सकती है।

स्वास्थ्य की स्थिति

थारू समुदाय के विकास में स्वास्थ्य एक मुख्य आयाम है। उत्तर प्रदेश की जनजातियों के स्वास्थ्य पर किए गए अध्ययनों की समीक्षा में स्वास्थ्य-व्यवहार, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, शिक्षा, रोजगार और विकास को परस्पर संबंधित कारकों के रूप में देखा गया है।

स्वास्थ्य की स्थिति को केवल चिकित्सकीय सेवाओं की उपलब्धता से नहीं समझा जा सकता। भौगोलिक पहुँच, परिवार की आय, पोषण, स्वच्छता, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता उपचार-व्यवहार और स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित करती है। इस कारण थारू बहुल क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, पोषण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य शिक्षा को समन्वित रूप से विकसित करना आवश्यक है।

पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी चिकित्सा

पारंपरिक ज्ञान थारू सांस्कृतिक विरासत का प्रमुख हिस्सा है। औषधीय पौधों, स्थानीय पर्यावरण, कृषि तथा पारंपरिक उपचार से संबंधित ज्ञान लंबे समय से मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ियों तक हस्तांतरित होता रहा है। यह ज्ञान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख रूप के रूप में देखा जा सकता है।

आधुनिकीकरण और पीढ़ीगत परिवर्तन के कारण पारंपरिक ज्ञान के हस्तांतरण में कमी की संभावना है। इसके संरक्षण के लिए वैज्ञानिक चिकित्सा का विरोध करना उचित नहीं होगा। इसके बजाय समुदाय की सहमति, नैतिक शोध, दस्तावेजीकरण, सामुदायिक स्वामित्व और अंतरपीढ़ी हस्तांतरण के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण किया जा सकता है।

थारू महिलाओं की स्थिति

थारू महिलाएँ कृषि, घरेलू उत्पादन, पशुपालन, सामुदायिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक परंपराओं में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। उनका आर्थिक योगदान कई बार औपचारिक रोजगार आँकड़ों में पूर्ण रूप से दिखाई नहीं देता। शिक्षा, स्वयं सहायता समूह तथा आजीविका कार्यक्रम महिलाओं की आर्थिक स्वायत्तता को बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। लेकिन यहाँ विचारणीय है कि महिला सशक्तीकरण को केवल रोजगार या आय के संदर्भ में नहीं देखा जाना चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति तक पहुँच, वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण, निर्णय-निर्माण और राजनीतिक सहभागिता इसके मुख्य आयाम हैं। थारू महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन बहुआयामी सामाजिक सशक्तीकरण की अवधारणा के आधार पर किया जाना चाहिए।

थारू युवाओं की बदलती आकांक्षाएँ

थारू युवा वर्तमान सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख वाहकों में हैं। उनकी आकांक्षाएँ पारंपरिक व्यवसायों से आगे बढ़कर उच्च शिक्षा, सरकारी सेवा, व्यावसायिक रोजगार, उद्यमिता तथा शहरी रोजगार की ओर बढ़ रही हैं। मोबाइल फोन और इंटरनेट ने युवाओं की सूचना तथा अवसरों तक पहुँच का विस्तार किया है।

हालाँकि डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता नई सामाजिक असमानताओं को जन्म दे सकती है। यह देखा जा रहा है कि बेहतर आर्थिक एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों के युवा डिजिटल साधनों का अधिक प्रभावी उपयोग कर रहे हैं, जबकि संसाधन-विहीन परिवारों के युवाओं की भागीदारी सीमित है।

डिजिटल परिवर्तन एवं सामाजिक परिवर्तन

डिजिटल प्रौद्योगिकी थारू समाज में उभरते सामाजिक परिवर्तन का मुख्य आयाम है। मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा, डिजिटल बैंकिंग, सरकारी सेवाओं, बाजार तथा संचार तक पहुँच के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं। यह समावेशन के दृष्टि से एक महत्वपूर्ण संकेत है लेकिन यह परिवर्तन व्यापक नहीं है। डिजिटल समावेशन सिर्फ इंटरनेट की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। डिजिटल साक्षरता, उपकरणों की वहनीयता,

भाषा, लिंग तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति डिजिटल संसाधनों का वास्तविक लाभ किस सीमा तक उठा सकता है। इसलिए डिजिटल विकास कार्यक्रमों के साथ समुदाय-आधारित डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को भी प्राथमिकता देना आवश्यक है।

राजनीतिक सहभागिता एवं स्थानीय शासन

राजनीतिक सहभागिता सामाजिक समावेशन का मुख्य संकेतक है। लोकतांत्रिक संस्थाओं और पंचायती राज व्यवस्था के विस्तार ने जनजातीय समुदायों को स्थानीय शासन में भाग लेने के अवसर प्रदान किए हैं। थारू राजनीतिक सहभागिता को मतदान, ग्राम सभा में भागीदारी, पंचायत प्रतिनिधित्व, राजनीतिक जागरूकता, प्रशासनिक अधिकारियों से संपर्क तथा स्थानीय विकास-योजना में सहभागिता के आधार पर समझा जा सकता है।

हालाँकि औपचारिक राजनीतिक सहभागिता अपने आप में वास्तविक प्रभाव सुनिश्चित नहीं करती। प्रभावी सहभागिता के लिए सूचना, शिक्षा, संस्थागत ज्ञान तथा सामुदायिक हितों को व्यक्त करने की क्षमता आवश्यक है। अतः राजनीतिक सशक्तीकरण को मात्र प्रतिनिधित्व तक सीमित न रखकर निर्णय-निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया से जोड़ना आवश्यक है।

सरकारी कल्याणकारी एवं विकास कार्यक्रम

थारू समुदाय के लिए जनजातीय कल्याण, ग्रामीण रोजगार, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और आजीविका-विविधीकरण से संबंधित सरकारी योजनाएँ महत्वपूर्ण हैं। किंतु किसी योजना की वास्तविक प्रभावशीलता केवल उसके अस्तित्व से निर्धारित नहीं होती। ग्राम स्तर पर उसका क्रियान्वयन, प्रशासनिक प्रक्रिया, दस्तावेजी आवश्यकताएँ, जागरूकता, बैंकिंग सुविधा तथा स्थानीय संस्थागत क्षमता भी लाभ प्राप्ति को प्रभावित करती हैं। इस संदर्भ में सहभागी विकास मॉडल अधिक उपयोगी हो सकता है। स्थानीय समुदाय को योजना-निर्माण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन में शामिल करने से विकास कार्यक्रमों की सामाजिक प्रासंगिकता और उत्तरदायित्व दोनों बढ़ सकते हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण ने थारू सामाजिक जीवन के अनेक पक्षों को प्रभावित किया है। शिक्षा, बाजार, संचार प्रौद्योगिकी, परिवहन तथा शहरी संपर्क ने उपभोग, व्यवसाय, पारिवारिक जीवन और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। फिर भी सांस्कृतिक परिवर्तन का अर्थ पूर्ण सांस्कृतिक विलुप्ति नहीं है। पारंपरिक त्योहार, सामुदायिक संबंध, भोजन, मौखिक परंपराएँ और सामाजिक पहचान परिवर्तित रूपों में अभी भी विद्यमान हैं। इस परिवर्तन को चयनात्मक आधुनिकीकरण के रूप में समझा जा सकता है। थारू समुदाय आधुनिक संस्थाओं और तकनीकों को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत के कुछ तत्वों को बनाए रख रहा है। समकालीन शोध भी व्यापक मुख्यधारा से जुड़ाव और निरंतर सामाजिक हाशियाकरण के सह-अस्तित्व की ओर संकेत करता है।

सामाजिक समावेशन एवं सामाजिक बहिष्करण

थारू समुदाय की समकालीन स्थिति को समझने के लिए सामाजिक समावेशन की अवधारणा विशेष रूप से उपयोगी है। सामाजिक समावेशन में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक संस्थाओं, बाजार, तकनीक तथा सार्वजनिक सेवाओं तक समान पहुँच शामिल है। इसके विपरीत, जब किसी समूह को इन संसाधनों से व्यवस्थित रूप से वंचित किया जाता है, तो सामाजिक बहिष्करण की स्थिति उत्पन्न होती है। थारू समुदाय में समावेशन की प्रक्रिया समान नहीं है। किसी परिवार को शिक्षा की सुविधा मिल सकती है, लेकिन रोजगार के अवसर सीमित हो सकते हैं। किसी व्यक्ति के पास इंटरनेट हो सकता है, लेकिन डिजिटल साक्षरता पर्याप्त न हो। समान रूप से सांस्कृतिक पहचान की सामाजिक स्वीकृति होने के बावजूद आर्थिक संसाधनों की कमी बनी रह सकती है। यह स्थिति थारू समाज में भी देखी जा सकती है। इसलिए जनजातीय विकास को मात्र कल्याणकारी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि क्षमता-विकास और वास्तविक सामाजिक समावेशन के दृष्टिकोण से देखना अधिक उचित है।

समकालीन प्रमुख चुनौतियाँ

थारू समुदाय की समकालीन स्थिति में कई परस्पर संबंधित चुनौतियाँ दिखाई देती हैं—

1. **पहली चुनौती** रोजगार की असुरक्षा है। पारंपरिक व्यवसाय अनेक परिवारों की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरी तरह पूरा नहीं कर पा रहे हैं, जबकि स्थायी वैकल्पिक रोजगार सभी के लिए उपलब्ध नहीं है।
2. **दूसरी चुनौती** भूमि एवं प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच से संबंधित है। भूमि उपयोग में परिवर्तन, वन प्रशासन और प्राकृतिक संसाधनों तक सीमित पहुँच पारंपरिक आजीविका को प्रभावित कर सकती है।
3. **तीसरी चुनौती** शैक्षणिक असमानता है, जिसमें प्राथमिक शिक्षा के बाद माध्यमिक, उच्च और व्यावसायिक शिक्षा तक निरंतरता प्रमुख प्रश्न है।
4. **चौथी चुनौती** स्वास्थ्य-संबंधी असुरक्षा है, जिसमें भौगोलिक पहुँच, पोषण, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य-व्यवहार प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
5. **पाँचवीं चुनौती** भाषा-परिवर्तन है, जिसके कारण थारू भाषायी परंपराओं का पीढ़ीगत हस्तांतरण कमजोर हो सकता है।
6. **छठी चुनौती** सांस्कृतिक वाणिज्यीकरण है। पर्यटन और बाहरी सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण आर्थिक अवसर पैदा कर सकते हैं, लेकिन इनके माध्यम से सांस्कृतिक परंपराएँ बाजार की वस्तु में भी परिवर्तित हो सकती हैं।
7. **सातवीं चुनौती** डिजिटल असमानता है, क्योंकि उपकरण और इंटरनेट की उपलब्धता अपने आप सार्थक डिजिटल सहभागिता सुनिश्चित नहीं करती।

ये कुछ चुनौतियाँ हैं जिसे वर्तमान थारू जनजाति के संदर्भ देखी जा सकती है अगर इन चुनौतियों से निपटने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किया जाता तो आधुनिकीकरण के असमान लाभ समुदाय के भीतर नई सामाजिक-आर्थिक विभेदीकरण की स्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं।

उभरते विकासात्मक अवसर

चुनौतियों के साथ-साथ थारू समुदाय के सामने अनेक विकासात्मक अवसर भी उपलब्ध हैं। कृषि विविधीकरण, कृषक उत्पादक संगठन, स्वयं सहायता समूह, हस्तशिल्प, स्थानीय पर्यटन, डिजिटल विपणन, कौशल विकास तथा शैक्षणिक विस्तार आजीविका के नए अवसर उत्पन्न कर सकते हैं।

थारू समुदाय की सांस्कृतिक विशिष्टता समुदाय-आधारित पर्यटन तथा सांस्कृतिक उद्योगों के विकास का आधार बन सकती है, बशर्ते स्थानीय समुदाय को स्वामित्व और निर्णय-निर्माण में वास्तविक भूमिका प्राप्त हो। समान रूप से उचित प्रशिक्षण के साथ डिजिटल तकनीक दूरस्थ समुदायों को शिक्षा, सरकारी सेवाओं, वित्तीय संस्थाओं और बाजारों से जोड़ सकती है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण

थारू समुदाय की समकालीन स्थिति को केवल “परंपरागत” और “आधुनिक” के द्वैत से समझना उपयुक्त नहीं है। यह एक जटिल सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। एक ओर शिक्षा, सड़क, बाजार, संचार तकनीक और सरकारी संस्थाएँ नए अवसरों का विस्तार कर रही हैं; दूसरी ओर रोजगार असुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित समस्याएँ, स्वास्थ्य संबंधी कमजोरियाँ और सांस्कृतिक परिवर्तन असमानताओं को बनाए हुए हैं। इस परिदृश्य को विभेदीकृत एकीकरण की अवधारणा के माध्यम से समझा जा सकता है। समुदाय के कुछ व्यक्ति और परिवार शिक्षा, रोजगार तथा मुख्यधारा की संस्थाओं में अधिक प्रभावी रूप से सम्मिलित हो रहे हैं, जबकि अन्य अभी भी आर्थिक एवं भौगोलिक रूप से हाशिए पर हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से विकास का मूल्यांकन केवल आय या उत्पादन वृद्धि से नहीं किया जाना चाहिए। आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक गरिमा, स्वास्थ्य, शिक्षा, राजनीतिक आवाज तथा व्यक्तिगत क्षमताएँ विकास के समान रूप से मुख्य आयाम हैं।

नीतिगत सुझाव

थारू समुदाय के समावेशी एवं सतत विकास के लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं—

1. माध्यमिक, उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए लक्षित जनजातीय शैक्षणिक कार्यक्रमों को मजबूत किया जाए।
2. कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, हस्तशिल्प और स्थानीय उद्यमों के माध्यम से आजीविका का विविधीकरण किया जाए।
3. स्वयं सहायता समूहों को ऋण, प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता और बाजार से जोड़ा जाए।
4. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य-जागरूकता पर समुदाय-आधारित कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
5. भूमि एवं आजीविका संसाधनों तक पहुँच को पर्यावरणीय संरक्षण के साथ संतुलित किया जाए।
6. थारू भाषा के संरक्षण के लिए दस्तावेजीकरण, शैक्षणिक सामग्री और डिजिटल सामग्री विकसित की जाए।
7. पारंपरिक पारिस्थितिक एवं औषधीय ज्ञान का समुदाय की सहमति और अधिकारों की रक्षा के साथ दस्तावेजीकरण किया जाए।
8. इंटरनेट उपलब्धता के साथ डिजिटल साक्षरता पर समान बल दिया जाए।
9. स्थानीय समुदाय के स्वामित्व एवं सहभागिता पर आधारित सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए।
10. ग्राम सभा, पंचायत और स्थानीय विकास-योजनाओं में वास्तविक राजनीतिक सहभागिता बढ़ाई जाए।
11. सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता, सामाजिक लेखा-परीक्षण तथा ग्राम-स्तरीय निगरानी को मजबूत किया जाए।
12. विभिन्न थारू बहुल क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में अंतर को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र-विशिष्ट विकास रणनीतियाँ तैयार की जाएँ।

निष्कर्ष

भारत में थारू जनजाति की समकालीन स्थिति निरंतरता, परिवर्तन, सामाजिक समावेशन और आंशिक बहिष्करण की परस्पर जुड़ी प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करती है। शिक्षा, बाजार, सरकारी संस्थाओं, संचार तकनीक तथा आधुनिक अवसंरचना से समुदाय के सामाजिक अवसरों में विस्तार हुआ है, किंतु आजीविका की असुरक्षा, भूमि एवं वन-संसाधनों से संबंधित प्रश्न, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ, शैक्षणिक असमानता, डिजिटल विभाजन तथा भाषायी-सांस्कृतिक परिवर्तन अभी भी प्रमुख मुद्दे हैं। इसलिए थारू विकास को मुख्यधारा में मात्र समाहित करने की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अधिक उपयुक्त दृष्टिकोण वह होगा जिसमें सामाजिक समावेशन के साथ सांस्कृतिक स्वायत्तता, आजीविका सुरक्षा के साथ पर्यावरणीय स्थिरता तथा आधुनिकीकरण के साथ सांस्कृतिक निरंतरता को समान महत्व दिया जाए। इससे थारू समुदाय आधुनिक संस्थाओं में अधिक प्रभावी सहभागिता कर सकेगा और साथ ही उसकी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान भी संरक्षित रह सकेगी।

संदर्भ सूची

1. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *Census of India 2011: A-11—State Primary Census Abstract for Individual Scheduled Tribes, Uttar Pradesh*. Ministry of Home Affairs, Government of India.
2. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *ST-14: Scheduled Tribe Population by Religious Community, Uttar Pradesh*. Census of India.
3. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *ST-15: Scheduled Tribe by Mother Tongue, Uttar Pradesh*. Census of India.
4. Dwivedi, G. R., et al. (2023). *Health Status of Tribes of Uttar Pradesh with Special Reference to Health-Seeking Behaviour of Uncharted Tharu Tribe: A Mapping Review*. Indian Journal of Medical Research.
5. Lahari, V. K. (2025). *Problems of Tharu Tribe in Contemporary India: A Social-Scientific Study with Special Reference to Uttar Pradesh*. International Journal of Research and Innovation in Social Science, 9(2), 1415–1426.
6. Majumdar, D. N. (1944). *The Tharus and Their Tarai Neighbours*. Universal Publishers.
7. Srivastava, S. K. (2011). *The Tharus: A Study in Culture Dynamics*. Agra University Press.
8. Sharma, B. D. (2012). *Tribal Development: A Theoretical Discourse*. Madhya Pradesh Hindi Granth Academy.
9. Kumar, S. (2022). *Language Shift: A Case Study of Tharu*. International Journal of Research and Innovation in Social Science.
10. Mishra, A., & Shrivastava, P. (2018). *Ethnobotanical Study of Tharu Community of Panchpedwa, Balrampur, Uttar Pradesh*. Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry, 7(1), 1626–1628.